साधकों का
मासिक प्रेरणा

वार्षिक शुल्क रु. 30/-
आजीवन शुल्क रु. 500/-

बुद्धवर्ष 2554, चैत्र पूर्णिमा, 18 अप्रेल, 2011 वर्ष 40 अंक 9

For Patrika in various languages, visit: http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

धम्मं चरे सुचरितं, न नं दुच्चरितं चरे।
धम्मचारी सुखं सेति, अस्मिं लोके परम्हि च॥
धम्मपद-- १६९

सुचरित धर्म का आचरण करे, दुराचरण से बचे। धर्मचारी इस लोक और परलोक (दोनों जगह) सुखपूर्वक विहार करता है।

भगवान बुद्ध ने धर्म सिखाया, बौद्धधर्म नहीं

लगभग पच्चीस वर्ष पूर्व जब मैं अमेरिका में धर्म सिखाने के लिए गया तब किसी ने मेरा इंटरव्यू लिया और पूछा कि मैंने अब तक कितने लोगों को बौद्ध बनाया है?

मैंने उत्तर दिया-- एक को भी नहीं।

इस पर पूछा गया-- क्या आप बौद्धधर्म नहीं सिखाते?

-- बिल्कुल नहीं।

-- तो क्या आप बौद्ध नहीं हैं?

-- बिल्कुल नहीं।

इन प्रश्नों के उत्तर सुन कर प्रश्नकर्ता चौंका, पर मैंने उसका समाधान करते हुए बताया कि भगवान बुद्ध ने एक व्यक्ति को भी बौद्ध नहीं बनाया। न उन्होंने बौद्धधर्म सिखाया। मैं उनका वास्तविक अनुगामी हूं तो मैं कैसे किसी को बौद्ध बना सकता हूं और कैसे अपने आपको बौद्ध कह सकता हूं? भगवान बुद्ध ने लोगों को धर्म सिखाया और धार्मिक बनाया। मैं भी उनके चरणचिह्नों पर चलते हुए लोगों को धर्म सिखाता हूं।

मेरी उपरोक्त प्रश्नोत्तरी की सूचना जब मेरी जन्मभूमि बरमा पहुँची तब वहां के प्रमुख भिक्षुओं के मन में मेरे प्रति दुर्भावना जागी। उनका कहना था कि हमारे यहां से बौद्धधर्म सीख कर गया और अब अपना ही कोई धर्म सिखाता है।

उनकी इस आलोचना से मैं पीड़ित हुआ, परंतु क्या करता? मेरे लिए बरमा जाकर उन्हें समझाने पर प्रतिबंध लगा हुआ था। यह इस कारण हुआ कि जब मैं बर्मा से भारत धर्म सिखाने के लिए आया, तब बरमी नागरिक होने के कारण बरमी पासपोर्ट लेकर ही आया। इस पासपोर्ट पर सरकार ने केवल भारत का ही एंडोर्समेंट दिया था, जिसका मतलब था कि भारत छोड़कर और किसी देश में यात्रा नहीं कर सकता था। मैंने इस नियम का कड़ाई से पालन किया। मैं पड़ोसी देश नेपाल भी नहीं गया, जहां भारतीय होने के नाते बिना पासपोर्ट के भी जा सकता था।

पुरातन भविष्यवाणी थी कि भगवान बुद्ध के प्रथम शासन के बाद उनकी कल्याणी शिक्षा भारत लौटेगी और वहां के लोग इसे सहर्ष स्वीकार करेंगे। तदनंतर यह सारे विश्व में फैलेगी। मेरे गुरुदेव सयाजी ऊ बा खिन की भी यही प्रबल धर्मकामना थी कि मैं भारत में विपश्यना सिखाने के बाद, विश्व के अन्य देशों में जाकर इसका प्रचार-प्रसार करूं। लेकिन पासपोर्ट की इस बंदिश के कारण मैं भारत छोड़कर और कहीं भी नहीं जा सकता था।

मैंने स्थानीय बरमी दूतावास से अपील की कि मुझ पर से यह प्रतिबंध हटा लिया जाय, लेकिन वे असमर्थ थे। ऐसा नहीं कर पा रहे थे इसलिए मेरा आवेदन-पत्र बरमी सरकार को रंगून भेजा। वहां बर्मा की सैनिक सरकार का अवकाश प्राप्त विदेशमंत्री ऊ ती हान मेरा घनिष्ट मित्र था और तत्कालीन प्रधानमंत्री कर्नल मौं मौं भी मेरा मित्र था। मैं उसके साथ दो बार सरकारी डेलीगेशन में विदेश गया था। वह परिचित ही नहीं, बल्कि मेरा घनिष्ट मित्र था। लेकिन सरकारी नियमों के अनुसार चाहते हुए भी मेरे पासपोर्ट पर अन्य देशों का एंडोर्समेंट न दे सका। अतः इन दोनों ने मुझे सुझाव दिया कि मैं बरमा के तत्कालीन राष्ट्राध्यक्ष जनरल नेविन को सीधे आवेदन करूं तो वे दोनों इसका समर्थन कर देंगे और काम बन जायगा। परंतु यह प्रयास भी असफल ही रहा।

पूज्य गुरुदेव के आदेश के अनुसार मैंने यह दृढ़ निश्चय कर रखा था कि भारत में दस वर्ष तक धर्मसेवा कर लेने के बाद मैं विश्व के अन्य देशों की धर्मचारिका के लिए अवश्य निकल पड़ूंगा। परंतु इसे संभव होते न देख कर मेरे लिए यही उपाय रह गया था कि मैं अपनी नागरिकता बदल कर भारतीय नागरिकता ग्रहण कर लूं, जिससे कि मुझे भारत सरकार द्वारा भारतीय पासपोर्ट प्राप्त हो जाय और मैं कहीं भी धर्मचारिका के लिए जा सकूं। मैंने यही किया।

इसे लेकर एक और कठिनाई खड़ी हुई। उन दिनों बरमी सरकार का एक नियम यह था कि यदि कोई बरमी नागरिक बाहर जाकर अपनी नागरिकता बदल ले तो वह गद्दार माना जायगा। उसे कभी भी देश में प्रवेश करने के लिए एंट्री-वीसा नहीं मिलेगा। यदि वह ट्रांजिट वीसा से आये तो भी एयरपोर्ट पर वह अपने विमान पर ही बैठा रहेगा। उसे नीचे उतरने नहीं दिया जायगा।

यह अत्यंत दुःखद स्थिति थी। मैं अपनी जन्मभूमि और धर्मभूमि में प्रवेश तक नहीं कर सकता था। स्थिति और अधिक दुःखद इस कारण हो गयी कि वहां के प्रमुख भिक्षुओं ने मेरा बहुत कड़ा विरोध करना शुरू कर दिया कि अब न मैं बौद्ध हूं और न बौद्धधर्म की शिक्षा देता हूं। उनकी शंकाओं का समाधान करने के लिए मेरे पास बहुत सामग्री थी परंतु मैं असमर्थ था। क्योंकि जब उस देश में जा ही नहीं सकता तब पत्राचार द्वारा इन प्रबल शंकाओं का समाधान कैसे करता?

सौभाग्यवश बर्मा का राष्ट्राध्यक्ष डॉ. मौं मौं अवकाश प्राप्त करके भारत आया। यहां के बरमी दूतावास में उसकी पुत्री नौकरी कर रही थी। उसने अपने पिता को बताया कि बरमा का कोई गोयन्का यहां और विश्व में धर्मप्रसारण का बहुत सफलतापूर्वक कार्य कर रहा है लेकिन उसे वह अपना कोई अलग धर्म बताता है। डॉ. मौं मौं ने रंगून रहते हुए मेरी कड़वी निंदा सुन रखी थी। अतः वह अपनी बेटी और पत्नी को लेकर मुझसे मिलने जयपुर चला आया। जिस बात को लेकर म्यंमा में मेरी निंदा हो रही है उस पर जब उसने बातचीत शुरू की तब मैंने कहा कि मैं बरमा का पुत्र हूं। वहीं मुझे भगवान बुद्ध का धर्म मिला। मैं उस सच्चाई को भुला कर बर्मा के साथ गद्दारी कैसे कर सकता हूं? इस विषय पर अधिक बातचीत करने के पहले मैंने उससे निवेदन किया कि क्यों न तुम तीनों इस शिविर में बैठ जाओ। स्वयं जांच कर देखो और मुझे मेरी गलती बताओ। जो सचमुच गलत होगा, उसे सुधारने में मुझे जरा भी हिचक नहीं होगी। संयोग से उसी दिन जयपुर का शिविर आरंभ हो रहा था। वे तीनों उसमें बैठ गये।

डॉ. मौं मौं पालि और भगवान की वाणी का बहुत बड़ा विद्वान था। उसे सच्चाई समझने में देर नहीं लगी। शिविर समापन पर जब वह मुझसे मिला तब उसकी आंखों से हर्ष की अश्रुधाराएं बह रही थीं। उसने कहा कि मैं अपने आपको बुद्ध की शिक्षा का बहुत बड़ा विद्वान मानता था परंतु अब तुम्हारे शिविर में बैठने पर ही समझ पाया कि भगवान की सही शिक्षा क्या है! अतः बर्मा लौट कर वह देश की कैबिनेट से मिला। राष्ट्राध्यक्ष पद से त्यागपत्र देने पर भी उसका वहां बहुत सम्मान था। उसने कैबिनेट के सदस्यों को समझाया कि गोयन्का जो कर रहा है वह बिल्कुल सही है। अपने भिक्षु ही भ्रांत हैं। अतः उसे बुला कर भिक्षुओं से बातचीत करायी जाय।

उन दिनों आस्ट्रेलिया में सिडनी के धम्मभूमि विपश्यना केंद्र पर मेरा शिविर चल रहा था। यकायक आस्ट्रेलिया स्थित बरमा के राजदूत का मेरे नाम फोन आया। उसने कहा कि सयाजी ऊ गोयन्का! आप आस्ट्रेलिया से सीधे भारत न लौटें। पहले बरमा रुकें और तब भारत जायँ। मैंने कहा मैं बर्मा कैसे जा सकूंगा? मुझे तो वहां के लिए वीसा ही नहीं मिल सकता। तब उसने हँसते हुए कहा कि आप क्यों चिंता करते हो? वीसा तो मैं ही दूंगा। अब आपको सामान्य वीसा ही नहीं, बल्कि ससम्मान राजकीय अतिथि का वीसा दिया जायगा। मैं चौंका, यह सब क्यों और कैसे हो रहा है? परंतु मन में एक आह्लाद भी हुआ कि मैं अपनी मातृभूमि और धर्मभूमि जा सकूंगा।

राजकीय अतिथि वीसा के साथ रंगून पहुँचा तो धूमधाम के साथ मेरा स्वागत किया गया और मुझे शहर में सरकारी अतिथिगृह ले गये, जहां मेरे ठहरने का प्रबंध किया हुआ था। परंतु मैं इसके लिए तैयार नहीं हुआ। मैंने कहा मेरा पुत्र को श्वे (बनवारी) यहीं रहता है। मैं उसके घर पर ही टिकूंगा। उन्होंने स्वीकार किया। अपने पुत्र के घर टिकने के बाद जब डॉ. मौं मौं मुझसे मिलने आया तब मैंने पूछा कि यह सब क्यों हो रहा है? उसने विनम्रभाव से बताया कि हमारे यहां के प्रमुख भिक्षु तुम्हारी कड़ी आलोचना कर रहे हैं। आपने जैसे मेरा समाधान किया वैसे ही मुझे विश्वास है कि इनका भी कर पाओगे। इसीलिए कल यहां के प्रमुख विद्वान भिक्षुओं की एक सभा बुलायी गयी है जिसे आप द्वारा संबोधित किया जायगा और बताया जायगा कि आप बौद्धधर्म क्यों नहीं सिखा रहे हैं। यह सुन कर मैं प्रसन्न हुआ, क्योंकि मैं भी यही चाहता था। बरमा के लोगों में मेरे प्रति जो गलत धारणा उत्पन्न हुई है, वह दूर कर दी जाय।

जब मैंने उन्हें कहा कि भगवान की मूल वाणी में उनकी शिक्षा को **धर्म** ही कहा गया है, कहीं **बौद्धधर्म** नहीं। धर्म धारण करने वालों को **धम्मिक**(धार्मिक), **धम्मट्ठ** (धर्म-स्थित), **धम्मचारी, धम्मजीवी, धम्मञ्ञु**(धर्मज्ञ), **धम्मधर, धम्मवादी** आदि ही कहा गया है। भगवान की शिक्षा को बौद्धधर्म और उनके अनुयायियों को बौद्ध कहना बाद में जोड़ा गया और हमने नासमझी से इसे स्वीकार कर लिया। इससे भगवान बुद्ध की महान शिक्षा हल्की बना दी गयी। भगवान बुद्ध की शिक्षा सचमुच महान है, क्योंकि धर्म शब्द सार्वजनीन है, सार्वदेशिक है, सार्वकालिक है। परंतु जब उसे बौद्धधर्म कहा गया तब वह संप्रदायवादी हो गया। वह संकुचित होकर केवल एक संप्रदाय तक सीमित रह गया। हमने नितांत नासमझी से ही इस **अप्पमाणो धम्मो** को **पमाणवन्तो** बना दिया। असीम को ससीम कर दिया। महान को लघु बना दिया।

मेरे प्रवचन के बाद भिक्षुओं ने कहा कि हमें दो दिन का समय दीजिये। हम देखेंगे कि क्या सचमुच बुद्धवाणी में बौद्धधर्म और बौद्ध शब्द हैं कि नहीं। सभा की अध्यक्षता मेरा धर्ममित्र और धर्मभाई मांडले यूनिवर्सिटी का अवकाशप्राप्त वाइसचांसलर डॉ. ऊ को ले कर रहा था। उसने एक नया प्रस्ताव लाते हुए कहा कि बरमी भाषा में **धम्म** के लिए **तया** (तरा) शब्द है। उसमें कोई परिवर्तन नहीं किया गया। आज भी हम कहते हैं -- चलो, अमुक भिक्षु का प्रवचन है, चल कर उससे **तया सुनें**। अथवा चलो तया (साधना) में बैठें। परंतु कभी नहीं कहते कि **बौद्धतया** चलें या **बौद्धतया की साधना** में बैठें। सचमुच बुद्ध ने बौद्ध शब्द का प्रयोग ही नहीं किया। यह अंग्रेजी राज्य में हुआ, जब धर्म को **बुद्धिज्म** और धर्म धारण करने वालों को **बुद्धिस्ट** कहने लगे। इस व्याख्या से सभी भिक्षु बहुत प्रसन्न हुए। सब के मन का संदेह दूर हुआ। बर्मी सरकार ने **'महासद्धम्मजोतिद्धज'** अलंकरण से मुझे विभूषित किया।

मेरे विरुद्ध ऐसा ही झूठा आरोप श्रीलंका के विद्वान भिक्षुओं ने लगाया था कि मैं बौद्धधर्म न सिखाकर बुद्ध की शिक्षा को बिगाड़ रहा हूं। सौभाग्य से न्यूयार्क में इसी विषय पर मेरे दो प्रवचन हुए, जिन्हें सुन कर अमेरिका में श्रीलंका का राजदूत बहुत

प्रभावित हुआ और उसे अपने विद्वान भिक्षुओं की गलती स्पष्टतया समझ में आयी। उसने अपने देश के राष्ट्रपति श्री महेंद राजपक्षे को सूचना दी कि वे मुझे राज्य-अतिथि के रूप में बुलायें और भिक्षुओं की शंकाओं का समाधान करायें।

वहां भी यही हुआ। मेरी व्याख्या से भिक्षुगण भावविभोर हो उठे और उनको यह भूल समझ में आयी कि भगवान के द्वारा सिखाये गये धर्म को बौद्धधर्म कह कर हमने उसे एक संप्रदाय में बांध दिया। जबकि भगवान जातिवाद के ही नहीं, संप्रदायवाद के भी बड़े विरोधी थे। मेरे वहां तीन प्रवचन हुए जिनमें वास्तविकता एकदम स्पष्ट हो गयी। वहां के राष्ट्राध्यक्ष श्री महेंद राजपक्षे ने मुझे **जिनसासनसोभन पटिपत्तिधज** नामक अलंकरण से सम्मानित किया और वहां के प्रमुख भिक्षु संघ ने **परियत्ति विसारद** की उपाधि से सम्मानित किया।

महत्व इन उपाधियों का नहीं, बल्कि इस बात का है कि वहां के शीर्षस्थ विद्वानों ने भी यह सत्य स्वीकार किया कि बुद्ध ने धर्म सिखाया, न कि बौद्धधर्म। लोगों को धार्मिक बनाया, न कि बौद्ध।

भारत लौटने पर मैंने अपने शोधकर्ता शिष्यों को यह देखने के लिए लगाया कि बुद्धवाणी में कहीं बौद्ध शब्द तो नहीं है। उन्होंने अनुसंधान करके समग्र पालि साहित्य में, यानी, केवल तिपिटक में ही नहीं, बल्कि उनकी अर्थकथाएं, टीकाएं और अनुटीकाएं भी सीडी-रोम में निवेषित कर रखी थीं। उनका अनुसंधान किया गया तो पाया कि सारे पालि वाङ्मय में **धम्म** से जुड़े हुए १७,०७३ शब्द हैं परंतु किसी एक के साथ भी **बौद्ध** शब्द नहीं जुड़ा है।

स्पष्ट है भगवान बुद्ध ने धर्म सिखाया न कि बौद्धधर्म; लोगों को धार्मिक बनाया न कि बौद्ध। हमने धर्म शब्द के साथ **बौद्ध** शब्द जोड़ कर कितनी बड़ी भूल की। अब उसे सुधारें।

हमारे लिए **बुद्ध, धम्म** और **संघ** ही त्रिरत्न हैं, न कि बौद्धधर्म और बौद्धसंघ। हम **बुद्ध, धम्म** और **संघ** की शरण जाते हैं, न कि **बौद्धधर्म** और **बौद्धसंघ** की। हम स्पष्ट ही कहते हैं-- **नत्थि मे सरणं अञ्ञं, धम्मो मे सरणं वरं,** यानी, शरण धर्म की है, न कि बौद्धधर्म की। इसके बाद जब प्रज्ञा का काम सिखाया जाता है, तब उसमें शरीर पर होने वाली संवेदनाओं को साक्षीभाव से देखना सिखाया जाता है। ये संवेदनाएं सब को होती हैं। किसी एक संप्रदाय के लोगों तक सीमित नहीं होतीं। अतः शील, समाधि, प्रज्ञा के धर्म पर किसी एक संप्रदाय की मोनोपोली नहीं होती।

भगवान बुद्ध ने जो सार्वजनीन धर्म सिखाया उसे **अरियो अट्ठङ्गिको मग्गो** कहा, यानी, शील, समाधि और प्रज्ञा का आठ अंग वाला वह मार्ग जो किसी भी अनार्य को आर्य बना दे। अधार्मिक को धार्मिक बना दे। इस मार्ग के जो तीन अंग हैं-- शील, समाधि, प्रज्ञा। वे सभी सार्वजनीन हैं। शील का पालन सभी संप्रदाय के लोग करना चाहते हैं। समाधि माने मन की एकाग्रता। इसका भी सभी पालन कर सकते हैं। क्योंकि इसके लिए अपने सहज स्वाभाविक आने-जाने वाले सांस के प्रति सजग रहना सिखाया गया है। अपने स्वाभाविक सांस पर मन टिकाना सभी संप्रदायवादियों के लिए सरल है। सांस सबका होता है। न इसके साथ कोई शब्द जोड़ा जाता है, न आकृति। वह किसी एक संप्रदाय से जुड़ा हुआ नहीं है। यदि इसके साथ **ओम नमो बुद्धाय** जैसे शब्द जोड़ दिये जाते तो यह सार्वजनीन नहीं रहता, सांप्रदायिक होता। मन की एकाग्रता के लिए शील यानी सदाचरण का पालन आवश्यक है। प्रकृति के अटूट नियमों के अनुसार इसके पालन से सुखद परिणाम ही आते हैं। दुराचरण सब के लिए दुःखद परिणाम ही लाता है। प्रकृति के सार्वजनीन नियम को स्वीकारने में किसी को कोई कठिनाई नहीं होती। धर्म पालन करने वाला व्यक्ति धार्मिक होता है, इसलिए धर्म सबका है। किसी एक संप्रदाय तक सीमित नहीं होता। परंतु धर्म को बौद्ध धर्म कहते ही यह सार्वजनीन नहीं रहा, बल्कि एक संप्रदायविशेष तक सीमित हो गया। ऐसी अवस्था में दूसरे संप्रदाय वाले इसे कैसे स्वीकारेंगे। इस उत्तम लक्ष्य के लिए इस दूषित शब्द को दूर करना ही होगा। यह कैसे हो पायगा, इस पर सभी विद्वान विचार-विमर्श कर निश्चित करें।

सार्वजनीन होने के कारण ही भगवान ने हमें विपश्यना का प्रशिक्षण दिया। उसे उन दिनों के अधिकांश संप्रदायवादियों ने बेझिझक स्वीकार कर लिया। आज भी इसका कहीं कोई विरोध नहीं होता। ऐसी अवस्था में कोई श्रद्धालु अनुयायी धर्म की शिक्षा को बौद्धधर्म कहने की धृष्टता कैसे करेगा? अतः भगवान के सिखाये हुए धर्म की शुद्धता के लिए विद्वानों को इस दूषित शब्द से छुटकारा दिलाना होगा। यह काम कठिन होते हुए भी अत्यंत आवश्यक है, इस पर ध्यान दिया जाय। क्योंकि इसी में हमारा और सबका मंगल समाया हुआ है।

मंगल मित्र,

सत्यनारायण गोयन्का

भाइंदर रेल्वे स्टेशन (प.) से पगोडा की बस-सेवा

प्रतिदिन प्रातः ६:४० से सायं ८:३५ तक निम्न समयों पर **प्रतिदिन** सीधे पगोडा जाने और वापस लौटने केलिए सार्वजनिक नगरीय बस-सुविधा उपलब्ध है। आगंतुक इसका लाभ उठाएं।

भाइंदर रेल्वे स्टे. (प.) से **बस** छूटने का समय-- ६:४०, ७:२०, ८:१०, ८:४०, ९:४०, १०:३५, ११:३०, १२:२५, १३:५०, १४:४५, १५:४०, १६:३५, १७:३०, १८:३०,१९:३५.

ग्लोबल विपश्यना पगोडा से **बस** छूटने का समय-- ७:२५, ८:००, ८:५५, ९:३५, १०:३५, ११:३०, १२:२५, १३:२०, १४:४५, १५:४०, १६:३५, १७:३०, १८:३५, १९:३५, २०:३५.

सहायक आचार्य कार्यशाला (दक्षिण भारत)

आगामी २८ जून सायं ५ बजे से ३ जुलाई दोपहर १ बजे तक, **धम्म पफुल्ल** विपश्यना केंद्र, **बैंगलोर** में सहायक आचार्यों की कार्यशाला आयोजित की गयी है। इसका संचालन मुख्यतः **अंग्रेजी** में होगा परंतु **तमिल** और **तेलुगू** में भी ट्रेनिंग देने की सुविधा उपलब्ध रहेगी। बुकिंग व अन्य जानकारी के लिए **संपर्क**-- श्रीमती अर्चना एवं उदय शेखर, फोन-०९८४५०७४४४८, ०८०-२६७११५३२, ईमेल-- from.archana@gmail.com

आवश्यकता है

धम्मानंद, मरकल, **पुणे विपश्यना केंद्र** पर कोर्स मैनेजर तथा केंद्र व्यवस्था संबंधी जानकारी रखने वाले अनुभवी व्यक्ति (पति-पत्नी दोनों) की आवश्यकता है।

ऐसे ही **धम्मपुब्बज, चूरू** के **नवनिर्मित विपश्यना केंद्र** पर मार्च में पहला शिविर लगा। यहां भी व्यवस्थापक से लेकर सभी प्रकार के

Registered No. NSK/46/2009-2011

WPP Postal License No. AR/Techno/WPP-05/2009-2011

धर्मसेवकों की आवश्यकता है। कृपया अपने संपूर्ण **बायोडाटा** के साथ केंद्रों के **संपर्क-पते** पर संपर्क करें।

बुद्धपूर्णिमा पर पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में एक दिवसीय शिविर

१७ मई, २०११, मंगलवार, **समयः** प्रातः ११ बजे से अपराह्न ४ बजे तक, **'ग्लोबल विपश्यना पगोडा'** के बड़े धम्मकक्ष (डोम) में हजारों साधकों और **पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य** में **एक दिवसीय** शिविर का आप भी लाभ उठाएं। कृपया ध्यान दें कि इस विशाल शिविर की व्यवस्था सुचारुरूप से हो और आपको किसी प्रकार की असुविधा न हो, इसलिए **बिना बुकिंग कराये न आएं। बुकिंग संपर्क: मो. 0 98928 55692, 0 98928 55945, फोन नं.: 022- 28451170, 33747543, 33747544**. **(फोन बुकिंग समय :** प्रातः ११ से सायं ५ तक, प्रतिदिन)

ईमेल Registration: **oneday@globalpagoda.org;**
Online Registration: www.vridhamma.org

नये उत्तरदायित्व

आचार्य

१. श्री मोहनलाल अग्रवाल, अकोला; *धम्म अनाकुल, अकोला तथा बुलढाना जिला की सेवा*
२. श्री नामदेव डोंगरे, नागपुर; *यवतमाल जिला तथा धम्म मल्ल की सेवा*
३. श्री अशोक पवार, नाशिक; *महाराष्ट्र में सहायक आचार्य प्रशिक्षण की सहायता*
4. Mr. Klaus & Mrs. Edith Nothnagel, Germany, *Spread of Dhamma*

वरिष्ठ सहायक आचार्य

१. श्री अभिजीत भाभे, मुंबई
२. श्री प्रकाश लड्ढा, नाशिक
३. श्रीमती कंचन लील, यूके/ भारत
४-५. श्री राजकुमार सिंह एवं श्रीमती सरोजिनी चौहान, फतेहपुर
६. श्री मन्नीलाल यादव, फतेहपुर
7. Ms. Veronika Gruber, *Canada*
8-9. Mr. David & Mrs. Line Lander, *Germany*

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

1. Mr. Daniel Erasmus, *South Africa*

बालशिविर शिक्षक

१. श्री पुनीत बुद्धभत्ती, कच्छ
२. श्रीमती रीपा बुद्धभत्ती, कच्छ
३. श्रीमती प्रेरणा चौधरी, थाणे, मुंबई
४. श्रीमती किरण गवली, बैंगलोर
५. श्रीमती आर.वी. जयमनी, बैंगलोर
६. श्रीमती सुरेखा कुमथेकर, कच्छ
७. डॉ.(श्रीमती) जनकबेन मेहता,कच्छ
८. श्री पारस मेहता, मुंबई
९. श्रीमती रसीला रायचंदा, कच्छ
१०. श्री योगेश त्रिपाठी, कच्छ
11. Mr. Yacob G. Medhin Shenkute &
12. Ms. Arsema Andargatchew Tesfaye, (both from *Ethiopia*)

दोहे धर्म के

शुद्ध धर्म ऐसा जगे, होवे चित्त विशुद्ध।
बौद्ध बने या न बने, मानव बने प्रबुद्ध॥

सम्प्रदाय की बेड़ियां, दर्शन का जंजाल।
धर्म-चक्र से सब कटें, मानव होय निहाल॥

भला होय सब जगत का, सुखी होंय सब लोग।
दूर होंय दारिद्र दुख, दूर होंय भव रोग॥

दृश्य होंय अदृश्य हों, पास होंय या दूर।
सकल विश्व के जीव सब, भोगें सुख भरपूर॥

जल थल नभ के जीव सब, मंगल लाभी होंय।
अंतर की गांठें खुलें, मुक्त दुखों से होंय॥

दसों दिशाओं के सभी, प्राणी सुखिया होंय।
निर्भय हों निर्वैर हों, सभी निरामय होंय॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा०) लिमिटेड
८, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोन: 2493 8893, फैक्स: 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

छोड अविद्या आंधळी, ढूंढ धरम रो दीप।
जन जन मन जाग्रत करै, प्रग्या ग्यान प्रदीप॥

ग्यान और विग्यान रो, भर्‌यो घणो भंडार।
आत्मग्यान बिन ग्यान सब, बणग्यो सिर को भार॥

जद जद सिर संकट पड़ै, प्रग्या देय जगाय।
रोयां पीट्यां दुख बढै, दुख घटणै रो नांय॥

बाहर बाहर खोजतां, मिलै न साचो ग्यान।
प्रग्या तो भीतर मिलै, भीतर ही निरवाण॥

बौद्ध कहायां के मिलै? सधै न कोई काम।
बोधि जगावै चिणख सी, हुवै सुखद परिणाम॥

मान लियां स्यूं के मिलै? अणमान्यां के होय?
जाण लियां स्यूं सै मिलै, अणजाण्या सब खोय॥

एक साधक
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादकः राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-422403, दूरभाष : (02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, 69- बी रोड, सातपुर, नाशिक-422007. **बुद्धवर्ष** 2554, **चैत्र पूर्णिमा, 18 अप्रेल, 2011**

वार्षिक शुल्क रु. **30/-,** US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. **500/-,** US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं. 19156/71. Registered No. NSK/46/2009-2011**

Licenced to post w**ithout Prepayment of postage** -- WPP Postal Licence No. AR/Techno/WPP-05/2009-2011
Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422403,** Dist. Nashik (M.S.)

If not delivered please return to:-

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086, 243712,
243238. **फैक्स :** (02553) 244176
Email: info@giri.dhamma.org
Website: www.vridhamma.org